3. अर्थग्रहण संबंधी एवं बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

दिए गए गद्यांशों को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1 **श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!**

मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है कि मैं उस पुण्य भूमि का वर्णन करता हूँ जहाँ प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है। यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है जिन पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है और बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं। अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। (पृष्ठ 45)

प्रश्न–

(क) लेखक को हरिद्वार का समाचार लिखने में आनंद क्यों आता है?

(ख) पर्वतों की शोभा को लेखक ने किस प्रकार वर्णित किया है?

(ग) लेखक के अनुसार, वे पेड़ कैसे होते हैं जिन पर तपस्वी तप करते हैं?

उत्तर–

(क) लेखक को हरिद्वार का समाचार लिखने में इसलिए आनंद आता है क्योंकि वह एक पुण्य भूमि है और उसका वर्णन करने मात्र से मन शुद्ध हो जाता है।

(ख) लेखक ने पर्वतों को सुंदर, हरे-भरे, मनोहर और भक्तिभाव से लहराते हुए बताया है, जिन पर जल प्रवाह बहते हैं और भक्ति से प्रेरित लगते हैं।

(ग) लेखक के अनुसार, वे वृक्ष बड़े-बड़े और ऐसे होते हैं मानो स्वयं तपस्वी हों; उन पर तपस्वी तप करते हैं और साधुओं की भक्ति भूमि में पनपते हैं।

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. लेखक को हरिद्वार का वर्णन करने में क्या अनुभव होता है?
   (क) दुःख (ख) आनंद
   (ग) थकान (घ) संकोच

2. लेखक के अनुसार हरिद्वार की भूमि कैसी है?
   (क) वीरों की भूमि (ख) शौर्य भूमि
   (ग) पुण्य भूमि (घ) युद्ध भूमि

3. पर्वतों की शोभा किससे बढ़ रही है?
   (क) लाल फूलों से
   (ख) भक्तिभाव से लहराते जल से
   (ग) हिमपात से
   (घ) मंदिरों से

4. हरिद्वार को किसकी भूमि कहा गया है?
   (क) साधुओं की (ख) राजाओं की
   (ग) व्यापारियों की (घ) कवियों की

5. कथन (A)–कारण (R) (Assertion and Reason)

   कथन (A) : लेखक को हरिद्वार का समाचार लिखने में अत्यंत आनंद आता है।

   कारण (R) : क्योंकि हरिद्वार एक पुण्य भूमि है, जहाँ प्रवेश मात्र से मन शुद्ध हो जाता है।

   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता।
   (ग) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

2 फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं। सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं। इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं। वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के बिश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी। एक ओर त्रिभुवन पावनी श्री गंगा जी की पवित्र धारा बहती है जो राजा भगीरथ के उज्ज्वल कीर्ति की लता सी दिखाई देती है। जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है, रंग जल का स्वच्छ और श्वेत है और अनेक प्रकार के जल जंतु कल्लोल करते हुए। (पृष्ठ 45-46)

प्रश्न–

(क) वृक्षों पर किस प्रकार के पक्षी चहचहाते हैं?

(ख) वर्षा के कारण चारों ओर क्या दिखाई पड़ता था?

(ग) हरे गलीचे क्यों बिछाए गए थे?

उत्तर–

(क) वृक्षों पर अनेक रंगों के पक्षी चहचहाते हैं।

(ख) वर्षा के कारण सभी ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी।

(ग) हरे गलीचे यात्रियों के विश्राम हेतु बिछाए गए थे।

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. 'हरियाली' किस कारण दिखाई पड़ती थी?
   (क) वसंत ऋतु के कारण
   (ख) वनों के कारण
   (ग) वर्षा के कारण
   (घ) नदियों के कारण

2. गंगा जी की धारा कैसी बताई गई है?
   (क) मंद और ठंडी (ख) पवित्र
   (ग) गंदी (घ) गर्म

3. पक्षी किस प्रकार कल्लोल करते हैं?
   (क) डरते-डरते (ख) निर्भय होकर
   (ग) धीरे-धीरे (घ) उड़ते हुए

4. गंगाजल को कैसा बताया गया है?
   (क) गर्म और मीठा
   (ख) ठंडा और खारा
   (ग) अत्यंत शीतल और मीठा
   (घ) दूषित

5. कथन (A)–कारण (R) (Assertion and Reason)

   कथन (A) : वृक्षों पर पक्षी निर्भय होकर कल्लोल करते हैं।

   कारण (R) : क्योंकि दुर्जन व बधिकों से पक्षियों को कोई डर नहीं है।

   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ग) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क)

3 यहाँ श्री गंगा जी अपना नाम नदी सत्य करतीं अर्थात् जल के वेग का शब्द बहुत होता है और शीतल … नदी के उन पवित्र छोटे-छोटे कनों को लेकर स्पर्श ही … पावन करता हुआ संचार करता है। यहाँ पर श्री गंगा जी … धारा हो गई हैं। एक का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से, इन दोनों धारों के बीच में एक सुंदर … पर्वत है और नील धारा के तट पर एक छोटा-सा … चुटीला पर्वत है और उसके शिखर पर चण्डिका देवी … मूर्ति है। यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है … यहीं स्नान भी होता है। विशेष आश्चर्य का विषय यह … कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं। दूसरा देवता नहीं। … तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं श्री गंगा जी … पाट भी बहुत छोटा है पर वेग बड़ा है, तट पर राजाओं … धर्मशाला यात्रियों के उतरने के हेतु बनी हैं और दुकानें … बनी हैं पर रात को बंद रहती हैं। (पृष्ठ …)

प्रश्न–

(क) यहाँ श्री गंगा जी अपना नाम नदी किस प्र… सत्य करती हैं?

(ख) यहाँ श्री गंगा कितने धारा हो गई हैं?

(ग) दोनों धारों के बीच में क्या है?

उत्तर–

(क) यहाँ श्री गंगा जी अपना नाम नदी सत्य करतीं अर्थात जल के वेग का शब्द बहुत होता है … शीतल वायु नदी के उन पवित्र छोटे-छोटे क… को लेकर स्पर्श ही से पावन करता हुआ सं… करता है।

(ख) यहाँ श्री गंगा जी दो धारा हो गई हैं–एक का … नील धारा और दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से …

(ग) दोनों धारों के बीच में एक सुंदर पर्वत है।

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. हर की पैड़ी घाट पर क्या होता है?
   (क) मेले लगते हैं (ख) स्नान होता है
   (ग) खेती होती है (घ) मंदिर नहीं है

2. गद्यांश के अनुसार, गंगा जी की दो धाराओं में से एक का नाम क्या है?
(क) हरधारा (ख) नीलधारा
(ग) दूधधारा (घ) सरस्वती

3. कौन-से देवता का यहाँ विशेष महत्व बताया गया है?
(क) विष्णु जी (ख) ब्रह्मा जी
(ग) केवल गंगा जी (घ) शिवजी

4. घाट के किनारे राजाओं की धर्मशाला किनके लिए बनी है?
(क) पंडितों के लिए
(ख) यात्रियों के उतरने हेतु
(ग) पुरोहितों के लिए
(घ) स्थानीय लोगों के लिए

5. कथन (A)-कारण (R) (*Assertion and Reason*)
कथन (A): गंगा जी का एक पाट बहुत बड़ा है।
कारण (R): वहाँ देवताओं के मंदिर बनाए गए हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता।
(ग) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।

उत्तर– 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ख)

4 यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि इच्छा क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं। पंडे दुकानदार इत्यादि कनखल व ज्वालापुर से आते हैं। पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं। इस क्षेत्र में पाँच तीर्थ मुख्य हैं हरिद्वार, कुशावर्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल। हरिद्वार तो हरि की पैड़ी पर नहाते हैं, कुशावर्त भी उसी के पास है, नीलधारा वही दूसरी धारा, विल्व पर्वत भी पास ही एक सुहाना पर्वत है जिस पर विल्वेश्वर महादेव की मूर्ति है और कनखल तीर्थ इधर ही है, यह कनखल तीर्थ बड़ा उत्तम है। किसी काल में दक्ष ने यहीं यज्ञ किया था और यहीं सती ने शिव जी का अपमान न सहकर अपना शरीर भस्म कर दिया। यहाँ कुछ छोटे-छोटे घर भी बने हैं। और धारामल्ल जैकृष्णदास खत्री यहाँ के प्रसिद्ध धनिक हैं। (पृष्ठ 46-47)

प्रश्न–
(क) संतोषी लोग किसे मानकर जीते हैं और क्यों?
(ख) गद्यांश में वर्णित क्षेत्र में कौन-कौन से तीर्थ मुख्य हैं?
(ग) विल्वपर्वत की क्या विशेषता बताई गई है?

उत्तर–
(क) संतोषी लोग एक पैसे को लाख मानकर जीते हैं क्योंकि वे उसी से संतुष्ट रहते हैं और ऐसा माना जाता है कि जो मनुष्य जहाँ रहता है, वहीं संतुष्ट होकर जीवन बिताता है।
(ख) गद्यांश में वर्णित क्षेत्र में पाँच तीर्थ मुख्य हैं–हरिद्वार, कुशावर्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल।
(ग) विल्वपर्वत एक ऐसा सुहावना पर्वत है जिस पर विल्वेश्वर महादेव की मूर्ति है और कनखल तीर्थ इससे एक ही तीर की दूरी पर है।

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. इनमें कौन-सा स्थान इस क्षेत्र के पाँच मुख्य तीर्थों में शामिल नहीं है?
(क) हरिद्वार (ख) कुशावर्त
(ग) देवप्रयाग (घ) कनखल

2. संतोषी व्यक्ति जीवन में किसे महत्त्वपूर्ण मानते हैं?
(क) धन को (ख) एक पैसे को
(ग) यश को (घ) भौतिक सुख को

3. विल्वपर्वत पर किस देवता की मूर्ति स्थापित है?
(क) भगवान विष्णु (ख) ब्रह्मा
(ग) विल्वेश्वर महादेव (घ) श्री राम

4. नीलधारा क्या है?
(क) एक पर्वत का नाम
(ख) एक नदी की धारा
(ग) एक गुफा का नाम
(घ) एक विशेष प्रकार का पत्थर

5. कथन *(A)*-कारण *(R)* *(Assertion and Reason)*

कथन (A): *कनखल तीर्थ विल्वपर्वत से एक ही तीर की दूरी पर स्थित है।*

कारण (R): *कनखल में ही सती ने अपने शरीर को भस्म कर दिया था।*

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है।

(घ) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ख)

5 हरिद्वार में यह बखेड़ा कुछ नहीं है और शुद्ध निर्मल साधुओं के सेवन योग्य तीर्थ है। मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है। मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है। चारों ओर से शीतल पवन आती थी। यहाँ रात्रि को ग्रहण हुआ और हम लोगों ने ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया। वैसे ही मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे। निदान इस उत्तम क्षेत्र में जितना समय बीता, बड़े आनंद से बीता। एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया। जल के छलके पास ही ठंढे-ठंढे आते थे। उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।

(पृष्ठ 47)

प्रश्न–

(क) *लेखक ने हरिद्वार को कैसा स्थान बताया है?*

(ख) *लेखक और उनके साथियों ने हरिद्वार में क्या-क्या आनंदपूर्वक कार्य किए?*

(ग) *लेखक ने पत्थर की पटिया पर भोजन करने के अनुभव की तुलना किससे की है और क्यों?*

उत्तर–

(क) लेखक ने हरिद्वार को शुद्ध निर्मल साधनों से युक्त एक योग्य तीर्थ स्थान बताया है, जिसकी सुंदरता का वर्णन करना भी कठिन है।

(ख) लेखक और उनके साथियों ने हरिद्वार आनंदपूर्वक गंगा स्नान किया और दिन-रात भागवत का पारायण (पाठ) किया।

(ग) लेखक ने पत्थर की पटिया पर किए गए भोजन के अनुभव की तुलना सोने की थाली के भोजन से की है। उन्होंने कहा है कि उस समय का पत्थर पर किया गया सादा भोजन सोने की थाली के भोजन से कहीं अधिक संतोषजनक और श्रेष्ठ था।

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. *लेखक के अनुसार हरिद्वार में किसका वर्णन करना असंभव है?*

(क) नदियों का (ख) पहाड़ों का

(ग) सौंदर्य का (घ) मंदिरों का

2. *लेखक ने रात कहाँ बिताई?*

(क) गंगा तट पर

(ख) एक मंदिर में

(ग) कृपा राम के बंगले में

(घ) किसी धर्मशाला में

3. *लेखक के भोजन के संबंध में कौन-सा कथन सही है?*

(क) उन्होंने केवल स्वादिष्ट भोजन किया।

(ख) उन्होंने पहले पत्थर की पटिया पर सादा भोजन किया और बाद में झरने (जल के छलके) के पास रात का भोजन किया।

(ग) उन्होंने केवल सोने की थाली में भोजन किया।

(घ) उन्होंने पूरे समय उपवास किया।

4. *उपर्युक्त गद्यांश का मुख्य भाव क्या है?*

(क) हरिद्वार के पहाड़ों का वर्णन

(ख) धार्मिक क्रियाकलापों का महत्त्व

(ग) सादगी और प्राकृतिक अनुभव का आनंद

(घ) यात्रा के दौरान मिलने वाले मित्रों का महत्त्व

5. कथन *(A)*-कारण *(R)* *(Assertion and Reason)*

कथन (A) : *लेखक ने पत्थर की पटिया पर किए गए भोजन को सोने की थाली के भोजन से श्रेष्ठ बताया।*

कारण (R) : *क्योंकि उस समय का वह सादा भोजन लेखक को अत्यधिक संतुष्टि और आनंद प्रदान करने वाला लगा।*

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन (A) सत्य है, परंतु कारण (R) असत्य है।

(घ) कथन (A) असत्य है, परंतु कारण (R) सत्य है।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क)

6 चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था। झगड़े-लड़ाई का कहीं नाम नहीं था। यहाँ और भी कई वस्तु अच्छी बनती हैं, जनेऊ यहाँ का अच्छा महीन और उज्ज्वल बनता है। यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है। निदान यहाँ जो कुछ है, अपूर्व है और यह भूमि साक्षात विरागमय साधुओं और विरक्तों के सेवन योग्य है और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ और अपने वर्णन द्वारा आपके पाठकों को इस पुण्यभूमि का वृत्तांत विदित करके मौनावलंबन करता हूँ। निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा। *(पृष्ठ 47-48)*

प्रश्न–

(क) चित्त में बारंबार किसका उदय होता है?

(ख) कुशा में किसकी अच्छी सुगंध आती है?

(ग) लेखक ने अपने मित्र या संपादक से क्या निवेदन किया है?

उत्तर–

(क) चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता है।

(ख) कुशा में दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है।

(ग) लेखक ने अपने मित्र या संपादक से निवेदन किया है कि वे इस पत्र को पाठकों के लिए प्रकाशित करें, क्योंकि लेखक अब उसी पवित्र भूमि में निवास करते हैं और उनका वर्णन करना चाहते हैं।

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

1. *कहाँ का जनेऊ अच्छा, महीन और उज्ज्वल बनता है?*

(क) काशी (ख) मथुरा

(ग) हरिद्वार (घ) प्रयाग

2. *गद्यांश में वर्णित भूमि किसके योग्य है?*

(क) व्यापारियों के लिए

(ख) युद्ध करने वालों के लिए

(ग) वैराग्यमय साधुओं के लिए

(घ) राजनेताओं के लिए

3. *गद्यांश में किस पुण्यभूमि की बात की गई है?*

(क) हरिद्वार (ख) मथुरा

(ग) वृंदावन (घ) काशी

4. *लेखक ने अपने आपको क्या बताया है?*

(क) एक कवि

(ख) एक संन्यासी

(ग) एक संपादक और यात्री

(घ) एक सैनिक

5. *कथन (A)-कारण (R) (Assertion and Reason)*

कथन (A): *हरिद्वार में दालचीनी और जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है।*

कारण (R): *यह सुगंध उसे एक पुण्यभूमि और अत्यंत सुखमय बनाती है।*

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन (A) सत्य है, परंतु कारण (R) असत्य है।

(घ) कथन (A) असत्य है, परंतु कारण (R) सत्य है।

उत्तर– 1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)

4. पाठ से प्रश्न-अभ्यास

(पृष्ठ 49-58)

आइए, अब हम इस पत्र को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

6.	निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।	• लेखक चाहता है कि पत्र को महत्त्व देकर कहीं स्थान दिया जाए, यानी इसे पढ़ा और सँजोया जाए। ✓ • लेखक चाहता है कि पत्र को महत्त्व देकर प्रकाशित किया जाए।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए–

(क) *"यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है।"*

उत्तर– प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ है कि हरिद्वार की कुशा घास बहुत ही अनोखी और विशेष है। इस घास से दालचीनी और जावित्री जैसी मसालों की तेज़ और मनमोहक खुशबू आती है।

लेखक यह कहना चाहते हैं कि यह सुगंध इतनी अद्‌भुत और स्पष्ट है कि ऐसा लगता है मानो यह सीधे-सीधे यह प्रकट कर रही हो कि यह जगह कोई साधारण भूमि नहीं बल्कि एक पवित्र और पुण्यमयी भूमि है। इतनी पवित्र कि यहाँ की सामान्य घास में भी इतनी दिव्य सुगंध है।

(ख) *"अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"*

उत्तर– ये पंक्तियाँ वृक्षों की महिमा का वर्णन करती हैं। लेखक कहता है कि इनका जन्म धन्य है जिससे याचना करने वाले कभी खाली हाथ वापस नहीं जाते हैं। वृक्ष हमें फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़ प्रदान तो करते ही हैं साथ ही जलने के बाद इनसे बने कोयले और राख (भस्म) भी हमारे मनोरथ को पूरा करते ... प्रस्तुत पंक्तियों में वृक्षों की परोपकारिता साफ़-सा... झलकती है।

सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखि...

(क) *"और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब त... वहीं निवास करता हूँ ..."*

लेखक का यह वाक्य क्या दर्शाता है? क्या आप... कभी किसी स्थान को छोड़कर ऐसा अनुभव कि... है? कब-कब?

(संकेत–किसी स्थान से लौटने के बाद भी उ... के विषय में सोचते रहना)

उत्तर– यह वाक्य लेखक की गहरी भावनात्मक जुड़ा... और हरिद्वार के प्रति उनके लगाव को दर्शाता है... पंक्ति का अर्थ है कि लेखक शारीरिक रूप से भले ही कहीं और हों, लेकिन उनका मन, उनकी भावनाएँ और उनकी चेतना अभी भी हरिद्वार की पावन और सुगंधमय भूमि में ही बसी हुई हैं।

हाँ, मैंने भी किसी स्थान को छोड़कर ऐसा ही अनुभव किया है। एक बार मैं ऋषिकेश गया था... वहाँ की प्राकृतिक छटा को देखकर मैं आत्मविभो... हो गया। जब मैं वापस घर लौटा तो मेरा मन नहीं लग रहा था। मेरे दिमाग से ऋषिकेश की प्राकृतिक सुंदरता का चित्र निकलता ही नहीं था... ऐसा लगता था मानो मेरा शरीर ही घर पर है और मन ऋषिकेश में। मैं जब-जब घर से बाहर किसी रमणीक जगह पर घूमने गया तब-तब वापस आने के बाद ऐसा अनुभव होता रहा।

(ख) *"पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पै... को लाख करके मान लेते हैं।"*

लेखक का यह कथन आज के समाज में कितना सच है? क्या अब भी ऐसे संतोषी लोग मिल... हैं? अपने विचार उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– आज के समाज में यह कथन आंशिक रूप से स... है। कुछ लोग वाकई में सादा जीवन, संतोष और आध्यात्मिकता में विश्वास रखते हैं, लेकिन बहु... बार संतोष का दिखावा किया जाता है। पहाड़ों ...

(घ) "... औ... राख... इस ... के बा...

उत्तर– प्रस्तुत ... के बारे ...

• संपूर्ण... जैसे– ... छाल ... रूप मे...

गाँव में रहने वाले कई शिक्षक, किसान या साधु कम संसाधनों में भी खुश रहते हैं, लेकिन कई बार पंडे नाम मात्र की दक्षिणा मिलने पर भी ऊपर से संतोष प्रकट करते हैं, पर मन में असंतोष रखते हैं।

(ग) *"मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है।"*

आपके विचार से लेखक ने उस स्थान को 'टिकने योग्य' क्यों कहा है? उस स्थान में कौन-कौन सी विशेषताएँ होंगी जो उसे 'टिकने योग्य' बनाती होंगी? (संकेत–केवल आराम, सुविधा या कोई और कारण भी।)

उत्तर– लेखक ने दीवान कृपा राम के बंगले को 'टिकने योग्य' इसलिए कहा है कि उसका बंगला हरिद्वार में था। हरिद्वार जैसे धार्मिक और प्राकृतिक स्थल में स्थित होने के कारण बंगले का वातवरण शांतिपूर्ण और मन को सुकून देने वाला था।

विशेषताएँ–

दीवान कृपा राम का बंगला हरिद्वार में था। हरिद्वार एक प्रमुख तीर्थस्थल है। यहाँ गंगा नदी बहती है और अनेक धार्मिक गतिविधियाँ होती रहती हैं। साथ ही हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता बरबस लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती है। इन सारी विशेषताओं के कारण दीवान कृपा राम के बंगले को लेखक ने 'टिकने योग्य' बताया है।

(घ) *"फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"*

इस वाक्य के माध्यम से आपको वृक्षों के महत्त्व के बारे में कौन-कौन सी बातें सूझ रही हैं?

उत्तर– प्रस्तुत वाक्य के माध्यम से हमें वृक्षों के महत्त्व के बारे में निम्नलिखित बातें सूझ रही हैं–

- **संपूर्ण जीवन उपयोगी**–वृक्ष का हर अंग जैसे–फल, फूल, पत्ते, बीज, लकड़ी, जड़, छाल आदि मनुष्य के लिए किसी न किसी रूप में उपयोगी होता है।
- **जलने के बाद भी उपयोगी**–जब वृक्ष जलता है तब भी उसकी राख (भस्म) और कोयले लोगों के काम आते हैं।
- **पर्यावरण और सुखद वातावरण प्रदान करना**–वृक्ष, छाया और गंध से भी लोगों को सुख देते हैं।
- **त्याग और परोपकार का प्रतीक**–वृक्ष बिना किसी स्वार्थ के दूसरों के लिए फल-फूल देते हैं।

अनुमान और कल्पना से

(क) *"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।"*

कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार में हैं। आप वहाँ क्या-क्या करना चाहेंगे?

उत्तर– मैं हरिद्वार में निम्नलिखित कार्य करना चाहूँगा–

- **गंगा स्नान करना**–हर की पैड़ी पर सुबह-सुबह पवित्र गंगा नदी में स्नान करूँगा। ऐसा माना जाता है कि इसमें आत्मा शुद्ध होती है और पापों से मुक्ति मिलती है।
- **गंगा आरती में भाग लेना**–शाम के समय हर की पैड़ी पर होने वाली भव्य गंगा आरती में भाग लेना एक अद्‌भुत आध्यात्मिक अनुभव होता है। दीपों की रोशनी और मंत्रों की ध्वनि मन को शांति देती है।
- **मंदिर दर्शन**
  - मनसा देवी मंदिर और चंडी देवी मंदिर की यात्रा करूँगा। ये मंदिर पहाड़ियों पर स्थित हैं, जहाँ जाने के लिए रोपवे या पैदल रास्ता होता है।
  - भरत माता मंदिर दक्षेश्वर महादेव मंदिर आदि भी देखना चाहूँगा।
- **स्थानीय व्यंजन चखना**–हरिद्वार के प्रसिद्ध शुद्ध शाकाहारी भोजन जैसे- कचौड़ी, जलेबी, आलू-पूड़ी और रबड़ी का स्वाद लेना चाहूँगा।
- **स्थानीय बाज़ार घूमना**–हरिद्वार के बाज़ारों से रुद्राक्ष, पूजा सामग्री, गंगाजल की बोतलें और हस्तशिल्प खरीदना चाहूँगा।

- **आश्रमों का भ्रमण**–शांति और साधना के लिए शांति कुञ्ज और पतंजलि योगपीठ जैसे आश्रमों का भ्रमण करूँगा।
- **गंगा किनारे बैठकर समय बिताना**–गंगा किनारे बैठकर बहते जल की आवाज़ और ठंडी हवा का आनंद लेना एक अलौकिक अनुभव होता है।

(ख) *"जल के छलके पास ही ठंढे-ठंढे आते थे।"*
कल्पना कीजिए कि आप गंगा के तट पर हैं और पानी के छींटे आपके मुँह पर आ रहे हैं। अपने अनुभवों को अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर– मैं गंगा तट पर हूँ। सूरज की सुनहरी किरणें गंगा के जल पर पड़कर उसे स्वर्णिम बना रही हैं। मैं गंगा तट पर बैठा हूँ और सामने से आती ठंडी हवाएँ मेरे चेहरे को छू रही हैं। पानी की लहरें किनारे से टकरा रही हैं और उनके हल्के छींटे मेरे मुख पर पड़ रहे हैं–जैसे माँ गंगा स्वयं मुझे आशीर्वाद दे रही हों।

उन छींटों में एक अद्‌भुत ठंडक है, जो केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि आत्मा को भी शीतल कर रही हैं। ऐसा लग रहा है जैसे मन की सारी उलझनें, सारे दुःख, इस पवित्र जल में बहते जा रहे हैं। भीड़ के बीच भी मैं स्वयं को अकेला अनुभव कर रहा हूँ–शांत, स्थिर और भीतर तक स्पर्शित।

(ग) *"सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।"*
यदि पेड़-पौधे सच में मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो क्या होगा?

उत्तर– यदि पेड़-पौधे सच में मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो निम्नलिखित बातें हो सकती हैं–

- वे हमसे बात करेंगे। शिकायत करेंगे कि हमने उन्हें बिना वजह क्यों काटा।
- वे अपने दुःख-दर्द, इच्छाएँ और भावनाएँ व्यक्त करेंगे।
- फल देने से पहले कहेंगे–"पहले पानी दो, फिर फल लो।"
- हर पेड़ का एक 'परिवार' होगा– माँ-पेड़, बच्चा-पौधा, दादा-वृक्ष।
- जंगलों में पंचायतें होंगी, फैसले लिए जा... कि कौन पेड़ कहाँ उगेगा या किसको कि... धूप-पानी चाहिए।
- घरों के गमले में रहने वाले पौधे कहेंगे... हमें खुले मैदान में रहना है, तंग गमले में... वे माली से कहेंगे कि हमें रोज़ पानी चाहि...
- वे मनुष्यों से कहेंगे कि हम ऑक्सीजन ... हैं, बदले में हमारी रक्षा करो।

(घ) *"यहाँ पर श्री गंगा जी दो धारा हो गई हैं... का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही ... नाम से।"*
इस पाठ में 'गंगा' शब्द के साथ 'श्री' और '...' लगाया गया है। आपके अनुसार उन्होंने ऐसा क्... किया होगा?

उत्तर– "गंगा" शब्द के साथ 'श्री' और 'जी' लगाने ... उद्देश्य सम्मान, श्रद्धा और पूज्यता प्रकट करना ... लेखक ने ऐसा निम्न कारणों से किया होगा–

- गंगा को देवी रूप में माना जाता है।
- श्रद्धा की भावना व्यक्त करने हेतु।
- भाषा की मर्यादा और भावनात्मक जुड़... बताने हेतु।
- शुद्ध और भक्ति से युक्त शैली।

(ङ) *कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार एक श्रवणबाधि... या दृष्टिबाधित व्यक्ति के साथ गए हैं। उसकी या... को अच्छा बनाने के लिए कुछ सुझाव दीजिए*

उत्तर– **श्रवणबाधित (सुनने में असमर्थ) व्यक्ति के साथ यात्रा के सुझाव–**

1. **संकेतों और लिखित संचार का उपयोग करें–**
   - आवश्यक सूचनाएँ जैसे–आरती का समय, दर्शन-स्थल, भोजन व्यवस्था लिखकर ...
   - सांकेतिक भाषा का प्रयोग करें या मोबाइल ऐप की मदद लें।
2. **दृष्टिगत सूचनाओं का महत्त्व बढ़ाएँ–**
   - संकेत चिह्न आदि की मदद से स्थान की जानकारी दें।
   - किसी भी धार्मिक स्थल या स्थान ... इतिहास को लिखित में दिखाएँ।

3. सुरक्षा का ध्यान रखें–

- भीड़-भाड़ वाले स्थानों में उन्हें साथ रखें ताकि वे दिशा भ्रम न हो जाएँ।
- आपात स्थिति के लिए संपर्क विवरण एक कार्ड में लिखकर उनकी जेब में रखें।

❖ **दृष्टिबाधित (देखने में असमर्थ) व्यक्ति के साथ यात्रा के सुझाव–**

1. साथ-साथ चलने की योजना बनाएँ–

- उन्हें हाथ पकड़कर या कंधे पर हाथ रखवाकर सावधानी से चलाएँ, खासकर सीढ़ियों, घाटों और भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में।

2. श्रव्य अनुभव को प्रोत्साहित करें–

- गंगा की लहरों की आवाज़, मंदिरों की घंटियाँ, आरती का संगीत–इनका वर्णन करें, उन्हें सुनने के लिए प्रेरित करें।

3. वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग करें–

- "यहाँ गंगा का जल ठंडा है, हल्की हवा चल रही है, फूलों की खुशबू आ रही है ..." जैसे विवरण देकर उन्हें वातावरण का अनुभव कराएँ।

4. स्पर्श के अनुभव को शामिल करें–

- मंदिर की दीवारें, घंटियाँ, जल, फूल–इन्हें छूने दें ताकि वे भावनात्मक रूप से जुड़ सकें।

लिखें संवाद

(क) *"मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे।"* लेखक और कल्लू जी के बीच हरिद्वार यात्रा पर एक काल्पनिक संवाद लिखिए।

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

(ख) *"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।"* लेखक और प्रकृति के बीच एक कल्पनात्मक संवाद तैयार कीजिए–जैसे पर्वत बोल रहे हों।

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

'है' और 'हैं' का उपयोग

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए–

- विशेष आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं।
- यों तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं।

आप जानते ही हैं कि एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'है' का प्रयोग किया जाता है और बहुवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'हैं' का। सोचिए, 'गंगा' शब्द एकवचन है, फिर भी इसके साथ 'हैं' क्यों लिखा गया है?

इसका कारण यह है कि कभी-कभी हम आदर-सम्मान प्रदर्शित करने के लिए एकवचन संज्ञा शब्दों को भी बहुवचन के रूप में प्रयोग करते हैं। इसे 'आदरार्थ बहुवचन' प्रयोग कहते हैं। उदाहरण के लिए–

- मेरे पिता जी सो रहे हैं।
- भारत के प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं।

अब 'आदरार्थ बहुवचन' को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं ...., वे अभी सभा में उपस्थित ....।
2. माता-पिता हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते ...., हमें उनका कहना मानना चाहिए।
3. मेरी बहन बाज़ार जा रही .... वहाँ से किताबें ले आएगी।
4. बाहर फेरीवाला ....। .... बुला लाओ।
5. डाकिया जी आए ....। उन्हें भी बुला लाओ।
6. आप तो बहुत दिन बाद ...., ... का स्वागत है।
7. डॉक्टर साहब बहुत विद्वान ...., ... से परामर्श लेना चाहिए।
8. आपके माता पिता कहाँ ....? क्या मैं .... से मिल सकता हूँ?

9. ये हमारे हिंदी के अध्यापक ...., हम .... से बहुत-कुछ सीखते-समझते हैं।

10. बंदर पेड़ पर उछल-कूद कर ....।

उत्तर– 1. हैं, हैं 2. हैं
3. है 4. जा रहा है, उसे
5. हैं 6. आए हैं, आप
7. हैं, उन 8. हैं, उन
9. हैं, उन 10. रहा है

भावों की पहचान

प्रेम,	संतोष,	भक्ति,	श्रद्धा,	वैराग्य,	आश्चर्य
करुणा,	हास्य,	शांति,	परोपकार,	दया,	दुःख

नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। सोचिए कि इनमें कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है? पहचानिए और चुनकर लिखिए–

1. उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।
2. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।
3. पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं।
4. हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।
5. सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।

उत्तर– 1. संतोषी, प्रेम 2. श्रद्धा, भक्ति
3. हास्य, आश्चर्य 4. शांति, करुणा
5. परोपकार, दया

काल की पहचान

"यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है और यहीं स्नान भी होता है।"

आप जानते ही होंगे कि काल के तीन भेद होते हैं–भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल। परस्पर चर्चा करके पता लगाइए कि ऊपर दिए गए वाक्य में कौन-सा काल प्रदर्शित हो रहा है? सही पहचाना, यह वाक्य वर्तमान काल को प्रदर्शित कर रहा है।

(क) नीचे दी गई पाठ की इन पंक्तियों को ... बताइए, इनमें क्रिया कौन से काल को ... कर रही है? (भूतकाल/वर्तमान/भवि...

1. निश्चय है कि आप इस पत्र को ... दीजिएगा।
2. यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे ... घिरी है।
3. वृक्ष ऐसे हैं कि पत्थर मारने से फल ...
4. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भ... उदय होता था।
5. मैं दीवान कृपा राम के घर के ... बंगले पर टिका था।

उत्तर– 1. भविष्य काल 2. वर्तमान का...
3. वर्तमान काल 4. भूतकाल
5. भूतकाल

(ख) अब इन वाक्यों के काल को अन्य का... बदलकर लिखिए और नए वाक्य बना...

उत्तर– 1. वर्तमान काल
- निश्चय है कि आप इस पत्र को ... दे रहे हैं।

भूतकाल
- निश्चय था कि आपने इस पत्र को ... दिया।

2. भूतकाल
- यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे ... घिरी थी।

भविष्य काल
- यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे ... घिरी होगी।

3. भूतकाल
- वृक्ष ऐसे थे कि पत्थर मारने से ... थे।

भविष्य काल
- वृक्ष ऐसे होंगे कि पत्थर मारने ... देंगे।

4. वर्तमान काल

- चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता है।

भविष्य काल

- चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होगा।

5. वर्तमान काल

- मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले में टिका हूँ।

भविष्य काल

- मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले में टिकूँगा।

पत्र की रचना

"और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ ..."

इस पंक्ति में लेखक संपादक महोदय को संबोधित करके अपनी बात लिख रहे हैं। आप जानते ही होंगे कि पत्र जिस व्यक्ति के लिए लिखा जाता है, उसे संबोधित किया जाता है। पत्र के अंत में अपना नाम लिखा जाता है ताकि पत्र पाने वाले को पता चल सके कि पत्र किसने लिखा है।

नीचे इस पत्र की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं से जुड़े वाक्यों में इनका मिलान कीजिए—

क्रम	पत्र की विशेषताएँ	पत्र से उदाहरण
1.	**व्यक्तिपरकता**—पत्र लेखन में लेखक के विचार, अनुभव और भावनाएँ प्रमुख होते हैं।	"ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया ...
2.	**संवादात्मकता**—पत्र संवाद का रूप है; पाठक से सीधा संवाद होता है।	श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!
3.	**स्वाभाविक शैली**—भाषा कृत्रिम नहीं होती; भावनाओं के अनुरूप होती है।	आपका मित्र—यात्री
4.	**व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन**—जहाँ लेखक अपने वास्तविक अनुभव को साझा करता है।	मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है ...
5.	**अभिवादन या संबोधन**—पत्र का आरंभ, जिसमें संबोधित व्यक्ति को आदरपूर्वक संबोधित किया जाता है।	हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिकता, साधु-संन्यासियों का जीवन, नदी, पर्वत, जल, गंगा स्नान आदि का अत्यंत विस्तार से वर्णन। जैसे—"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है ..."
6.	**हस्ताक्षर**—लेखक अपने नाम या संबंध से पत्र को समाप्त करता है।	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ... निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।
7.	**उपसंहार और निवेदन**—लेखक पत्र समाप्त करता है और अपनी इच्छा या निवेदन प्रकट करता है।	एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके ...
8.	**मुख्य विषय-वस्तु**	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ ...

आप एक विशेषता को एक से अधिक वाक्यों से भी जोड़ सकते हैं।

उत्तर—

क्रम	पत्र की विशेषताएँ	पत्र से उदाहरण
1.	**व्यक्तिपरकता**—पत्र लेखन में लेखक के विचार, अनुभव और भावनाएँ प्रमुख होते हैं।	हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिकता, साधु-संन्यासियों का जीवन, नदी, पर्वत, जल, गंगा स्नान आदि का अत्यंत विस्तार से वर्णन। जैसे—"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है ..."
2.	**संवादात्मकता**—पत्र संवाद का रूप है; पाठक से सीधा संवाद होता है।	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ ...
3.	**स्वाभाविक शैली**—भाषा कृत्रिम नहीं होती; भावनाओं के अनुरूप होती है।	"ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया ..."

4.	**व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन**–जहाँ लेखक अपने वास्तविक अनुभव को साझा करता है।	एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके ...
5.	**अभिवादन या संबोधन**–पत्र का आरंभ, जिसमें संबोधित व्यक्ति को आदरपूर्वक संबोधित किया जाता है।	श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!
6.	**हस्ताक्षर**–लेखक अपने नाम या संबंध से पत्र को समाप्त करता है।	आपका मित्र – यात्री
7.	**उपसंहार और निवेदन**–लेखक पत्र समाप्त करता है और अपनी इच्छा या निवेदन प्रकट करता है।	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ... निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।
8.	**मुख्य विषय-वस्तु**	मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है ...

पत्र

आपने जो यात्रा-वर्णन पढ़ा है, इसे भारतेंदु हरिश्चंद्र ने एक संपादक को पत्र के रूप में लिखकर भेजा था। आप भी अपनी किसी यात्रा के विषय में अपने किसी परिचित को पत्र लिखकर बताइए।

उत्तर–

प्रिय मित्र शशांक

सप्रेम नमस्कार,

आशा है कि तुम सपरिवार कुशलपूर्वक होंगे। मैं यहाँ स्वस्थ और प्रसन्न हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं तुम्हें अपनी हाल ही की हरिद्वार यात्रा का वर्णन करना ... मेरे जीवन की सबसे अविस्मरणीय यात्राओं ...

पिछले सप्ताह मैं अपने परिवार के साथ ... जैसे ही हमने गंगा के पावन तट पर कदम ... अलौकिक शांति से भर गया। गंगा की कलकल ... मन के सारे क्लेशों को बहा ले जाती थी। ... घोष के बीच जब हमने गंगा स्नान किया, ... मानो आत्मा भी पवित्र हो गई हो।

हमने हर की पैड़ी पर संध्या आरती ... दीपों की रोशनी जब गंगा जल में झिलमिलाने ... दृश्य इतना मनोहारी था कि शब्दों में वर्णन क... है। चारों ओर भक्तों की आस्था और भक्ति ...

इसके पश्चात हमने मनसा देवी और चं... दर्शन किए। पर्वत पर स्थित ये मंदिर प्राकृतिक ... भरपूर हैं। रोपवे से ऊपर जाते समय पूरा हरिद्वार ... गंगा नदी का दृश्य दिखाई देता है, जो अत्यंत रमणी...

इस यात्रा ने न केवल मुझे धार्मिक रूप से ... बल्कि प्रकृति की गोद में बिताया गया समय ... भी बहुत शांति दे गया। यदि अवसर मिले ... भी यही यात्रा करने की सलाह दूँगा। यकीन ... अनुभव जीवन-भर याद रहेगा। शेष कुशल है। ... की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा मित्र

हिमांशु

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में 'हरिद्वार' से जुड़े शब्द अपने मन से या पाठ से चुनकर लिखिए–

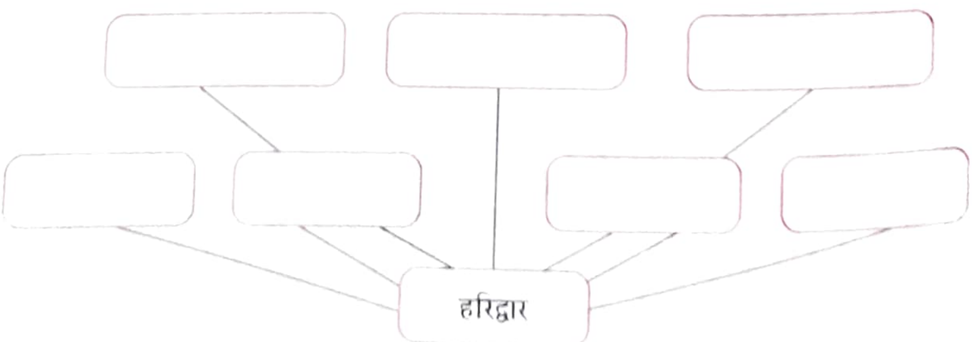

उत्तर–

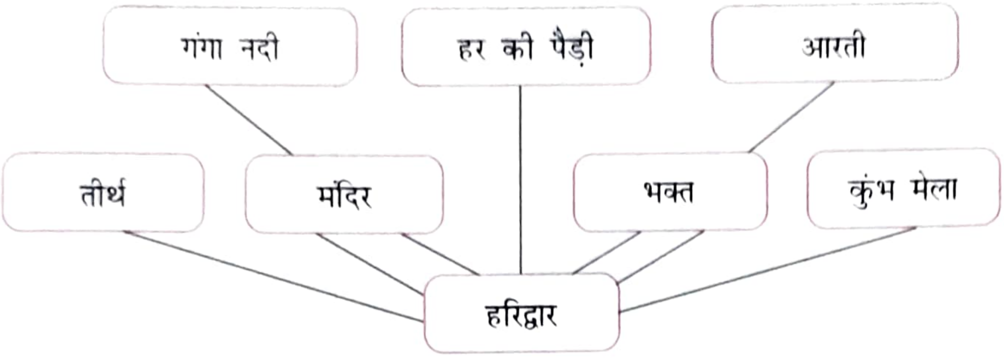

लेखन के अनोखे तरीके

(क) 'हरिद्वार' पाठ में लेखक ने हरिद्वार के अपने अनुभवों को बहुत ही साहित्यिक और कल्पनाशील भाषा में प्रस्तुत किया है जिसमें कई स्थानों पर उन्होंने तुलनात्मक वाक्यों के माध्यम से दृश्यों का वर्णन किया है। जैसे–हरी-भरी लताओं की तुलना सज्जनों से इस प्रकार की गई है–

''पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।''

नीचे कुछ तुलनात्मक वाक्य दिए गए हैं। पाठ में ढूँढ़िए कि इन तुलनात्मक वाक्यों को लेखक ने किस प्रकार विशिष्ट तरीके से लिखा है यानी विशिष्टता प्रदान की है?

1. वृक्षों की तुलना साधुओं से की गई है।

उत्तर– बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानों एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं।

2. गंगाजल की मिठास की तुलना चीनी से की गई है।

उत्तर– जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है।

3. हरियाली की तुलना गलीचे से की गई है।

उत्तर– वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो हरे गलीचे की जात्रियों के विश्राम हेतु बिछायत बिछी थी।

4. नदी की धारा की तुलना राजा भगीरथ के यश (कीर्ति) से की गई है।

उत्तर– एक ओर त्रिभुवन पावनी श्री गंगा जी की पवित्र धारा बहती है जो राजा भगीरथ के उज्ज्वल कीर्ति की लता-सी दिखाई देती है।

(ख) ''मैं उस पुण्य भूमि का वर्णन करता हूँ जहाँ प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है।''

"पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।"

उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यान से देखिए, ये आज की हिंदी की तरह नहीं लिखी गई हैं। इसे लेखक ने न केवल अपनी शैली में लिखा है, अपितु इसमें प्राचीन हिंदी भाषा की छवि भी दिखाई देती है। नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं आप इन्हें आज की हिंदी में लिखिए।

1. ''इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं।''

उत्तर– इन पेड़ों पर रंग-बिरंगे पक्षी निर्भय होकर चहचहाते हैं और शहर के शोरगुल से बेपरवाह होकर आनंदपूर्वक खेलते हैं।

2. ''वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दृष्टि पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी।''

उत्तर– वर्षा के मौसम में चारों ओर हरियाली ही हरियाली दीखती है, जैसे हर तरफ हरे कालीन बिछाए गए हों, जो विश्राम के लिए आमंत्रित करते हों।

3. ''यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि इच्छा क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं।''

उत्तर– यह एक ऐसा निर्मल तीर्थ है जहाँ काम और क्रोध-जैसी भावनाओं से युक्त मनुष्य वहाँ वास तक नहीं करता।

4. ''मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है।''

उत्तर– मैं वहाँ पहुँचते ही इतना प्रसन्न और निर्मल अनुभव करने लगा कि शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है।

5. ''यहाँ रात्रि को ग्रहण हुआ और हम लोगों ने ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया।''

उत्तर– यहाँ रात में ग्रहण लगा; हमने उस दौरान आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पाठ भी किया।

6. ''उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।''

उत्तर– उस समय-सीलन में मिले साधारण भोजन का आनंद तो सोने की थाली में परोसे जाने वाले व्यंजनों से भी कहीं अधिक था।

7. ''निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।''

उत्तर– कृपया इस पत्र को उचित स्थान प्रदान करने की कृपा करें।

(ग) इस रचना में हरिश्चंद्र जी ने कहीं-कहीं प्राचीन वर्तनी का प्रयोग किया है, जैसे-शिखर के लिए शिषर, यात्रियों के लिए जात्रियों। ऐसे शब्दों की सूची बनाइए। आप इन शब्दों को कैसे लिखते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर–

प्राचीन वर्तनी		**आधुनिक वर्तनी**
शिषर	–	शिखर
जात्रियों	–	यात्रियों
घाम	–	धूप
अर्थी	–	याचक
बिछायत	–	बिछौना
मिष्ट	–	मीठा
खानि	–	युक्त

5. पाठ से आगे प्रश्न-अभ्यास

(पृष्ठ 58-62)

आपकी बात

1. ''मैंने गंगा जी के तट पर रसोई करके... किया''

क्या आपने कभी खुले वातावरण में या प्र... के पास भोजन किया है? वह अनुभव ... खाने से कैसे भिन्न था?

उत्तर– हाँ, हमने खुले वातावरण में भोजन किया है... और खुली हवा में खाना खाने पर मुझे लग... कि खाना ज़्यादा स्वादिष्ट और ताज़ा लगने ... है। प्रकृति के बीच पेड़ों की सरसराहट, ... की चहचहाहट, हल्की हवा, इन सबकी उप... खाने को ''इस पल में जीने'' जैसा एहसास ... है। घर में हम अक्सर टीवी, फोन या चर्चा ... जाते हैं, लेकिन बाहर ध्यान केंद्रित रहता है ... हर कौर का स्वाद गहराई से महसूस होता है।

2. ''उस समय के पत्थर पर का भोजन का ... सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था''

आपके जीवन में ऐसा कोई क्षण आया, ... किसी सामान्य-सी वस्तु ने आपको गहरा ... दिया हो? उसके बारे में बताइए।

उत्तर– हाँ, मेरे जीवन में कई ऐसे पल आए हैं ... सबसे साधारण चीज़ ने गहरा सुख दिया और ... यादगार तारीख बना दिया।

एक ठंडी सुबह, मैं घर की बालकनी में बै... था। आस-पास सिर्फ पत्तों की सरसराहट थी औ... दूर पक्षियों की चहचहाहट। मेरी माँ ने मुझे ए... साधारण चाय का प्याला दिया। उस एक प्याले में मुझे न केवल स्वाद मिला, बल्कि एक ... की भावना, संबंध और माँ की ममता का एहसास हुआ। उतना साधारण, फिर भी कितना गहन ए... उस पल ने जीवन को गहराई से महसूस करने ... मदद की।

3. "हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।"

आपको किस स्थान पर पवित्रता और प्रसन्नता का अनुभव होता है? क्या कोई ऐसा स्थान है जहाँ जाते ही मन शांत हो गया हो? उस स्थान की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

उत्तर– मेरे लिए सबसे ज्यादा पवित्रता और प्रसन्नता का अनुभव उस समय होता है जब मैं किसी शांत प्राकृतिक स्थल पर होता हूँ, जैसे पहाड़ी, झील किनारा, जंगल का कोना या नदी के पास एकांत बेंच। जब मैं ऐसे प्राकृतिक परिवेश में होता हूँ, तो मेरा मन तुरंत तनावमुक्त हो जाता है।

इस जगह की निम्न बातें हमें अच्छी लगीं–

1. यहाँ हरी-भरी घाटियाँ, बहती नदियाँ और पेड़ों की सरसराहट सुनने को मिलती है।
2. कोई भीड़-भाड़ नहीं, फोन की रिंगटोन या तेज मशीनों का कोई स्थान नहीं है।
3. बिना किसी सामाजिक दबाव या जरूरत महसूस किए, पूरी तरह खुद को खो देने की आज़ादी।

4. पाठ में वर्णित है, यहाँ के वृक्ष "फल, फूल, गंध...जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"

क्या आपके जीवन में कोई पेड़, फूल या प्राकृतिक वस्तु है जिससे आप विशेष जुड़ाव महसूस करते हैं? क्यों?

उत्तर– हाँ, मेरे लिए भी प्रकृति की एक खास वस्तु है-वह है बरगद का पेड़। इसके साथ मेरा एक गहरा और आत्मीय संबंध है। इसका प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

1. बरगद वर्षों तक जीता है और उसकी मजबूत जड़ें और विशाल तने मुझे समय की गहराइयाँ महसूस कराती हैं। यह मुझे जीवन में धैर्य और स्थिरता का संदेश देता है।
2. उसके विस्तृत वृक्ष तले बैठकर महसूस होता है जैसे सारी ऊर्जा उसके विशाल तने और शाखाओं से मेरे भीतर प्रवाहित हो रही हो। यह अनावश्यक चिंताओं और तनाव को दूर कर, आंतरिक शक्ति से जोड़ता है।
3. बचपन से ही कई त्योहार, पंचायतें और मिलन स्थल बरगद के नीचे होते थे। इसलिए मेरे मन में यह पेड़ खुशी, संस्कृति और पुरानी यादों का प्रतीक भी है।
4. गर्मियों में बरगद की बड़ी छाया, गिरते पत्तों की आवाज़ और आस-पास के पक्षियों की चहचहाहट–ये सभी मिलकर मुझे मौन में ताज़गी और पूर्णता का अनुभव कराते हैं।

प्रकृति का सौंदर्य और संरक्षण

"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है..."

आपने पत्र में पढ़ा कि हरिद्वार का प्राकृतिक सौंदर्य अद्‌भुत है। इस सौंदर्य को बनाए रखने में प्रत्येक मानव की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस विषय में अपने समूह में चर्चा कीजिए। इसके बाद अपने समूह के साथ मिलकर "तीर्थ ही नहीं, पृथ्वी भी पावन हो!" विषय पर जन-जागरूकता पोस्टर बनाइए।

"तीर्थ ही नहीं, पृथ्वी भी पावन हो"

- "एक दिन मंदिर में, तो हर दिन धरती पर"
- "प्रकृति को पूजें-प्लास्टिक छोड़ें"
- "पेड़ लगाएँ–पर्यावरण बचाएँ।"

मुख्य संदेश

तीर्थ की तरह पृथ्वी को भी पवित्र मानें-हमें इसे पूजा की भाँति सँभालना है।

स्वास्थ्य और योग

''चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।''

अनेक लोग आज भी मन की शांति, स्वास्थ्य-लाभ और भक्ति के लिए तीर्थ और पर्वतीय स्थानों की यात्रा करते हैं। मन की शांति और स्वास्थ्य के लिए हमारे देश में हजारों वर्षों से योग भी किया जाता रहा है।

(क) 5 मिनट ध्यान लगाकर या मौन बैठकर अपने आस-पास की ध्वनियों को सुनिए, अपनी श्वास पर ध्यान दीजिए तथा ध्यान को केंद्रित करने का प्रयास कीजिए। इस अनुभव के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर– जब हम ध्यान के लिए मौन बैठे तो हवा की हल्की सरसराहट, घर में किसी दूर से आने वाली गतिविधि या पेड़ों की पत्तियों की हलचल का अनुभव हुआ। पहले तो मन में फैलाव का एहसास हुआ, पर धीरे-धीरे वह साँसों की लय में केंद्रीकृत हो गया। ऐसी साधना से तनाव कम होने लगी और आंतरिक शांति का अनुभव हुआ।

(ख) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अपने विद्यालय के कार्यक्रमों को बताने के लिए एक 'सूचना' लिखिए जिसे सूचना-पट पर लगाया जा सके।

उत्तर– **सूचना**

विषय : अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 पर विद्यालय-कार्यक्रम

दिनांक : रविवार, 21 जून 2026

समय : प्रातः 7 : 30 बजे से 9 : 00 बजे तक

स्थान : विद्यालय का मुख्य प्रांगण।

कार्यक्रम

1. प्रार्थना और उद्घाटन
   - ''अतिथि/प्रधानाचार्य द्वारा दीप प्रज्वलन एवं संदेश''
   - ''एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य'' विषय पर संक्षिप्त संबोधन।
2. विद्यार्थियों द्वारा सामान्य आसन
3. विशेष सत्र
   - अनुभवी योग शिक्षक द्वारा निर्देशित: ...
     और मानसिक स्वास्थ्य।
   - स्वस्थ जीवनशैली हेतु योग के लाभों ...
4. समापन
   - धन्यवाद ज्ञापन
   - सामूहिक ''ओम'' उच्चारण
5. अन्य गतिविधियाँ
   - योग-संबंधी पेंटिंग/पोस्टर प्रतियोगिता
   - योग विषयक निबंध/व्याख्यान प्रतियो...

कृपया निम्न निर्देशों का पालन करें–

- ड्रेस कोड–हल्का, आरामदायक ...
  मित्रवत।
- वस्तुएँ लाएँ–योग-मैट या तौलिया, ...
  बोतल।
- उपस्थिति–दिनांक 21 जून को सुबह ...
  तक विद्यालय पहुँचना अनिवार्य है।
- भागीदारी–सभी छात्र, शिक्षक व ...
  अनिवार्य रूप से शामिल हों।

सूचना जारीकर्ता

प्राचार्य

(अ.ब.स. विद्यालय)

प्रेषितः कक्षा शिक्षकगण, सूचना बोर्ड प्र... समन्वयक।

आइए–इस योग दिवस पर हम सब मिलक... पृथ्वी, एक स्वास्थ्य'' का संदेश फैलाएँ औ... पर्यावरण की भलाई में योग की भूमिका को ...

सज्जन वृक्ष

''सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते ...

आप जानते ही हैं कि पेड़-पौधे हमारे जीवन ... अत्यंत आवश्यक हैं। किंतु हमारे ही कार्यों के का... होते जा रहे हैं। आइए, पेड़-पौधों को अपना मि...

(क) एक पौधा लगाइए और उसकी देखभ... ताकि वह कुछ वर्षों में बड़ा पेड़ ब... एक नाम दीजिए और उसका मित्र ब...

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

यात्रा सबके लिए

(क) कल्पना कीजिए कि कुछ मित्रों का समूह एक यात्रा पर जा रहा है। आप एक मार्गदर्शक या टूरिस्ट गाइड हैं। आप इन सबकी यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

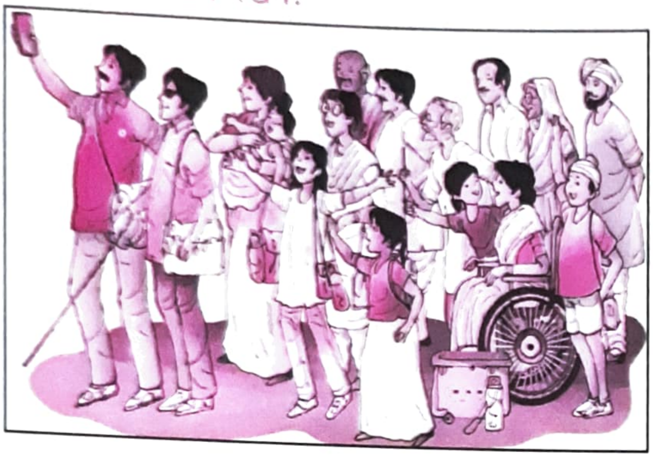

उपर्युक्त चित्र में सबकी अलग-अलग आवश्यकताएँ हो सकती हैं। इन्हें ध्यान में रखते हुए सोचिए कि वहाँ पहुँचने, घूमने, भोजन आदि में आप कैसे सहायता करेंगे?

उत्तर– (क) यात्रा सुविधाजनक बनाने के लिए निम्नलिखित कार्य करेंगे।–

(*i*) यात्रा कार्यक्रम से अवगत कराना

(*ii*) लचीला समय सारणी

(*iii*) जिम्मेदारियाँ बाँटना

(*iv*) बेहतर संचार और सहभागिता

(*v*) दर्शकों की ओर समर्पण

(*vi*) सुरक्षा और तैयारी

(*vii*) भोजन और खपत

(*viii*) समय-पालन और लचक

उपर्युक्त चित्र में हम विभिन्न तरह के लोगों को देख रहे हैं–जैसे दृष्टिहीन व्यक्ति, बुर्जुग, बच्चे, महिला, व्हीलचेयर पर व्यक्ति आदि। इनके हिसाब से पहुँचने, घूमने, खाने आदि में हम निम्न तरीकों से सहायता करेंगे।

1. पहुँचने में सहायता–

(क) दृष्टिहीन व्यक्ति:

- रास्ते का सुरक्षित मार्ग बताएँगे।
- ट्रेन/बस में सुरक्षित सीट तक मार्गदर्शन क...

(ख) व्हीलचेयर उपयोगकर्ता:

- रैंप, लिफ्ट और सुविधाजनक प्लेटफ... पहुँचाएँगे।
- वाहन तक व्हीलचेयर को आसानी से लोड-... करने में मदद करेंगे।

(ग) बुजुर्ग और बच्चों के साथ परिवार:

- धीमी चाल-चलते हुए साथ रहेंगे।
- बच्चे को संभालकर रखेंगे और बचाव के ... अपनाएँगे।

2. घूमने-फिरने में सुविधा–

(क) सुलभता पर ध्यान देंगे।

(ख) जरूरतमंद को गाइड अथवा सहायक ... कराएँगे।

(ग) दृष्टिहीन के लिए ऑडियो गाइड, व्हील... उपयोगकर्ता को स्पॉट-फ्री मार्ग।

(घ) बैठने और ठहरने के लिए आरामदायक ... उपलब्ध कराएँगे।

3. भोजन और चिकित्सा की समुचित व्यव... करवाएँगे।

(ख) अपने किसी मित्र के साथ बिना बोले ... कीजिए-संकेतों से। अब सोचिए कि ... में श्रवणबाधित व्यक्ति के लिए क्या-... आवश्यक होगा?

उत्तर– यात्रा के दौरान श्रवणबाधित व्यक्ति के ... निम्नलिखित तैयारियाँ और सुविधाएँ आव... होती हैं–

(*i*) यात्रा से पहले सभी तैयारियों को लिखि... में दें।

(*ii*) जहाँ जरूरी हो, स्थानीय मदद या सा... साथ यात्रा करें।

(*iii*) अस्पताल, दफ्तर, एयरपोर्ट में अपनी स्थिति बताने के लिए कार्ड रखें।

(ग) यात्रा करते हुए ऐतिहासिक धरोहरों या भवनों की सुरक्षा के लिए आप किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

उत्तर– (*i*) धरोहरों और उनके आस-पास कूड़ा-कचरा न फैलाएँ।

(*ii*) धरोहरों के अंदर फोटोग्राफी न करें।

(*iii*) इमारतों की दीवारों या पत्थरों पर अपना नाम न लिखें।

(*iv*) मूर्ति, कलाकृति या किसी भी नाजुक हिस्से को न छुएँ।

(*v*) धरोहर के अंदर या आस-पास शोर न मचाएँ।

आज की पहेली

पाठ में से शब्द खोजिए और नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए–

1. एक मसाले का नाम
2. कपास से जुड़ा एक शब्द
3. जहाँ स्नान होता है।
4. वृक्ष के किसी अंग का नाम
5. एक नगर या तीर्थ का नाम
6. व्यापार से जुड़ा स्थान
7. एक नदी का नाम
8. एक पर्वत का नाम
9. एक धार्मिक ग्रंथ का नाम

उत्तर– 1. दालचीनी 2. गलीचा
3. हरि की पैड़ी 4. जड़
5. हरिद्वार 6. ज्वालापुर
7. गंगा 8. विल्वपर्वत
9. श्री भागवत

झरोखे से

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे एक और पत्र का एक अंश नीचे दिया गया है। इसे पढ़िए और आपस में विचार कीजिए।

हरिद्वार के मार्ग में

हरिद्वार के मार्ग में अनेक प्रकार के वृक्ष और पक्षी देखने में आए। एक पीले रंग का पक्षी छोटा बहुत मनोहर देखा गया। बया एक छोटी चिड़िया है उसके घोंसले बहुत मिले। ये घोंसले सूखे बबूल काँटे के वृक्ष में हैं और एक-एक डाल में लड़ी की भाँति बीस-बीस, तीस-तीस लटकते हैं। इन पक्षियों की शिल्पविद्या तो प्रसिद्ध ही है, लिखने का कुछ काम नहीं है। इसी से इनका सब चातुर्य प्रगट है कि सब वृक्ष छोड़ के काँटे के वृक्ष में घर बनाया है। इसके आगे ज्वालापुर और कनखल और हरिद्वार हैं, जिसका वृत्तांत अगले नंबरों में लिखूँगा।

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

खोजबीन के लिए

भारतेंदु हरिश्चंद्र का एक प्रसिद्ध नाटक है–अंधेर नगरी। इसे पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

6. अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भारतेंदु ने हरिद्वार के प्राकृतिक सौंदर्य को कैसे वर्णन किया है?

उत्तर– हरिद्वार को तीन ओर हरे-भरे पर्वतों, विविध वृक्षों और रंग-बिरंगे पक्षियों से परिपूर्ण बताया है। गंगा की शीतल और स्वच्छ धारा ने मन को आनंदित किया।

प्रश्न 2. भारतेंदु के अनुसार हरिद्वार में किन-किन तीर्थों का सामूहिक महत्त्व है?

उत्तर– भारतेंदु ने पाँच प्रमुख तीर्थों का सामूहिक महत्त्व बताया है। वे हैं–

हरिद्वार (हरि की पैड़ी), कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल।

प्रश्न 3. हरिद्वार के ब्राह्मण-पंडों हेतु भारतेंदु का विश्लेषण क्या है?

उत्तर– उन्होंने लिखा कि हरिद्वार के पंडे लालची नहीं थे। सरल, संतोषी और लोभ-रहित थे। वे "एक पैसे को लाख करके" मान लेते थे।

प्रश्न 4. वर्षा होने से प्रकृति में क्या परिवर्तन आता है?

उत्तर– वर्षा होने से सब ओर हरियाली ही दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि हरे गलीचा यात्रियों के विश्राम के लिए बिछा दी गई हो।

प्रश्न 5. हरिद्वार में गंगा जी कितनी धारा हो गई हैं?

उत्तर– हरिद्वार में गंगा जी दो धारा हो गई हैं–

एक नाम नीलधारा और दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरिद्वार की यात्रा क्यों की?

उत्तर– भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरिद्वार की यात्रा धार्मिक आस्था और तीर्थाटन के उद्देश्य से की थी। इस यात्रा के माध्यम से उन्होंने हरिद्वार के धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव किया।

प्रश्न 2. हरिद्वार में भारतेंदु ने कौन-कौन से धार्मिक स्थल देखे?

उत्तर– हरिद्वार में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरि की पैड़ी, माया देवी मंदिर, चंडी देवी मंदिर और अन्य प्रमुख घाटों के दर्शन किए।

प्रश्न 3. हरिद्वार यात्रा में भारतेंदु हरिश्चंद्र को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर– हरिद्वार यात्रा से भारतेंदु हरिश्चंद्र को भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज की गहराई से समझ मिली। इस यात्रा ने उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को और भी व्यापक और गहन बनाया।

प्रश्न 4. 'हरिद्वार' पाठ में भारतेंदु ने किन प्रमुख स्था[illegible] का उल्लेख किया है और उनकी विशेषता [illegible] बताई है?

उत्तर– 'हरिद्वार' पाठ में भारतेंदु ने हरिद्वार के [illegible] महत्त्वपूर्ण स्थानों का उल्लेख किया है, जिन[illegible] सबसे प्रमुख 'हरि की पैड़ी' है। उन्होंने यहाँ [illegible] वाली भव्य गंगा आरती और जलती हुई दीपमा[illegible] के अद्भुत दृश्य का वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने मनसा देवी और [illegible] देवी के मंदिरों का भी उल्लेख किया है। जहाँ [illegible] चढ़ाई को उन्होंने एक कठिन लेकिन फल[illegible] यात्रा बताया है।

प्रश्न 5. 'हरिद्वार' पाठ को लिखने का मुख्य उद्दे[illegible] क्या था?

उत्तर– 'हरिद्वार' पाठ को लिखने का मुख्य उद्दे[illegible] हरिद्वार की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता [illegible] उजागर करना था। भारतेंदु इस पाठ के माध्[illegible] से पाठकों को न केवल इस पवित्र तीर्थस्थल [illegible] सुंदरता से परिचित कराना चाहते थे, बल्कि [illegible] तीर्थयात्रा के महत्त्व और वहाँ जाकर मिलने वा[illegible] मानसिक शांति का संदेश भी देना चाहते थे। [illegible] पाठ धार्मिक आस्था के साथ-साथ प्रकृति प्रेम [illegible] सांस्कृतिक गौरव की भावना को भी दर्शाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. हरिद्वार को तीर्थों का मुकुट क्यों कहा गया [illegible]

उत्तर– हरिद्वार को तीर्थों का मुकुट इसलिए कहा [illegible] है क्योंकि यह स्थान न केवल पवित्र गंगा [illegible] के तट पर स्थित है, बल्कि यहाँ अनेक धार्मि[illegible] ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के स्थान भी [illegible] यहाँ के गंगा घाट, मंदिर और कुंभ का आयोज[illegible] इसे विशेष बनाते हैं। हिंदू धर्म के अनुसार, [illegible] मोक्षदायिनी नगरी मानी जाती है, जहाँ स्नान क[illegible] से सारे पाप दूर हो जाते हैं। इसलिए इसे स[illegible] तीर्थों में श्रेष्ठ और मुकुट माना गया है।

प्रश्न 2. भारतेंदु के अनुसार हरिद्वार में किन-किन तीर्थों का सामूहिक महत्त्व है?

उत्तर– भारतेंदु ने पाँच प्रमुख तीर्थों का सामूहिक महत्त्व बताया है। वे हैं–

हरिद्वार (हरि की पैड़ी), कुशावर्त्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल।

प्रश्न 3. हरिद्वार के ब्राह्मण-पंडों हेतु भारतेंदु का विश्लेषण क्या है?

उत्तर– उन्होंने लिखा कि हरिद्वार के पंडे लालची नहीं थे। सरल, संतोषी और लोभ-रहित थे। वे "एक पैसे को लाख करके" मान लेते थे।

प्रश्न 4. वर्षा होने से प्रकृति में क्या परिवर्तन आता है?

उत्तर– वर्षा होने से सब ओर हरियाली ही दिखाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि हरे गलीचा यात्रियों के विश्राम के लिए बिछा दी गई हो।

प्रश्न 5. हरिद्वार में गंगा जी कितनी धारा हो गई हैं?

उत्तर– हरिद्वार में गंगा जी दो धारा हो गई हैं–

एक नाम नीलधारा और दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरिद्वार की यात्रा क्यों की?

उत्तर– भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरिद्वार की यात्रा धार्मिक आस्था और तीर्थाटन के उद्देश्य से की थी। इस यात्रा के माध्यम से उन्होंने हरिद्वार के धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव किया।

प्रश्न 2. हरिद्वार में भारतेंदु ने कौन-कौन से धार्मिक स्थल देखे?

उत्तर– हरिद्वार में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरि की पैड़ी, माया देवी मंदिर, चंडी देवी मंदिर और अन्य प्रमुख घाटों के दर्शन किए।

प्रश्न 3. हरिद्वार यात्रा में भारतेंदु हरिश्चंद्र को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर– हरिद्वार यात्रा से भारतेंदु हरिश्चंद्र को भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज की गहराई से समझ मिली। इस यात्रा ने उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को और भी व्यापक और गहन बनाया।

प्रश्न 4. 'हरिद्वार' पाठ में भारतेंदु ने किन प्रमुख [illegible] का उल्लेख किया है और उनकी विशेषता [illegible] बताई है?

उत्तर– 'हरिद्वार' पाठ में भारतेंदु ने हरिद्वार के [illegible] महत्त्वपूर्ण स्थानों का उल्लेख किया है, जिनमें सबसे प्रमुख 'हरि की पैड़ी' है। उन्होंने यहाँ [illegible] वाली भव्य गंगा आरती और जलती हुई दीपमाला [illegible] के अद्भुत दृश्य का वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने मनसा देवी और [illegible] देवी के मंदिरों का भी उल्लेख किया है। जहाँ [illegible] चढ़ाई को उन्होंने एक कठिन लेकिन फल[illegible] यात्रा बताया है।

प्रश्न 5. 'हरिद्वार' पाठ को लिखने का मुख्य [illegible] क्या था?

उत्तर– 'हरिद्वार' पाठ को लिखने का मुख्य [illegible] हरिद्वार की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता [illegible] उजागर करना था। भारतेंदु इस पाठ के मा[illegible] से पाठकों को न केवल इस पवित्र तीर्थस्थल [illegible] सुंदरता से परिचित कराना चाहते थे, बल्कि [illegible] तीर्थयात्रा के महत्त्व और वहाँ जाकर मिलने वा[illegible] मानसिक शांति का संदेश भी देना चाहते थे। [illegible] पाठ धार्मिक आस्था के साथ-साथ प्रकृति प्रेम [illegible] सांस्कृतिक गौरव की भावना को भी दर्शाता है

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. हरिद्वार को तीर्थों का मुकुट क्यों कहा गया [illegible]

उत्तर– हरिद्वार को तीर्थों का मुकुट इसलिए कहा [illegible] है क्योंकि यह स्थान न केवल पवित्र गंगा [illegible] के तट पर स्थित है, बल्कि यहाँ अनेक धार्मि[illegible] ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व के स्थान भी [illegible] यहाँ के गंगा घाट, मंदिर और कुंभ का आयो[illegible] इसे विशेष बनाते हैं। हिंदू धर्म के अनुसार [illegible] मोक्षदायिनी नगरी मानी जाती है, जहाँ स्नान [illegible] से सारे पाप दूर हो जाते हैं। इसलिए इसे [illegible] तीर्थों में श्रेष्ठ और मुकुट माना गया है।

प्रश्न 2. लेखक ने हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर– लेखक ने हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन अत्यंत भावनात्मक और चित्रात्मक शैली में किया है। उन्होंने गंगा के निर्मल जल, हरे-भरे वृक्षों, पहाड़ियों और घाटों की छटा का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। सुबह-संध्या की आरती, जल में दीपों की कतारें और वातावरण में फैली पवित्रता पाठक के मन को मोह लेती हैं। हर दिशा में शांति, श्रद्धा और आस्था का वातावरण है, जिससे यह स्थान अत्यंत रमणीय प्रतीत होता है।

रिक्त-स्थान पूर्ति

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. यह भूमि ·············· ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।
2. इन वृक्षों पर ·············· रंग के पक्षी चहचहाते हैं।
3. जल यहाँ का अत्यंत ·············· है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है।
4. यहाँ ·············· अपना नाम नदी सत्य करती है।
5. यहाँ ·············· की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है।

उत्तर– 1. तीन 2. अनेक
3. शीतल 4. श्री गंगा जी
5. हरि।

सही-गलत

सही वाक्यों के सामने सही (✓) और गलत के सामने (✗) का निशान लगाएँ–

1. चित्त में बारबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।
2. यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध नहीं आती है।
3. यह भूमि साक्षात विरागमय साधुओं और विरक्तों के सेवन योग्य है।
4. यह भूमि चारों ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।
5. यहाँ पर श्री गंगा जी तीन धारा हो गई हैं।

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓)
4. (✗) 5. (✗)

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

सही विकल्प का चयन कीजिए।

1. *'हरिद्वार' पाठ में किस नदी का उल्लेख है?*
   (क) यमुना (ख) गंगा
   (ग) सरस्वती (घ) नर्मदा
2. *भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरिद्वार की यात्रा कब की थी?*
   (क) 1868 ई. (ख) 1870 ई.
   (ग) 1872 ई. (घ) 1871 ई.
3. *'हरिद्वार' पाठ में किस पर्व का वर्णन है?*
   (क) दीपावली (ख) होली
   (ग) कुंभ (घ) मकर संक्रांति
4. *'गंगा तट पर किनकी धर्मशाला यात्रियों के ठहरने के लिए बनी हैं?*
   (क) राजाओं की (ख) सैनिकों की
   (ग) जनता की (घ) पंडों की
5. *लेखक किसके घर के ऊपर बँगले पर टिका था?*
   (क) कल्लू जी के
   (ख) दीवान कृपा राम के
   (ग) पंडों के
   (घ) होटल में

उत्तर– 1. (ख) 2. (घ) 3. (ग)
4. (क) 5. (ख)

केस स्टडी स्रोत पर आधारित

1. यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि इच्छा क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं। पंडे दुकानदार इत्यादि कनखल व ज्वालापुर से आते हैं। पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं। इस क्षेत्र में पाँच तीर्थ मुख्य हैं हरिद्वार, कुशावर्त, नीलधारा, विल्वपर्वत और कनखल। हरिद्वार तो हरि की पैड़ी पर नहाते हैं, कुशावर्त भी उसी के पास है, नीलधारा वही दूसरी धारा, विल्व पर्वत भी पास ही एक सुहाना पर्वत है जिस